>

Title: Need to formulate an effective scheme for Delhi Metro.

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (उत्तर पूर्व दिल्ली): सभापति महोदय, मुझे खुशी है और धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे अपनी बात रखने का यहां मौका दिया दरअसल, मेरी पीड़ा दिल्ली मेट्रो के बारे में है। अभी यहां तीन-तीन मंत्री बैठे हैं। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जो हम यहां बोलते हैं, क्या कोई उसको नोटिस करता है? कई बार हम बहुत सारी चीजें यहां उठाते हैं, लेकिन मुझे आज तक किसी ने बुलाकर यह नहीं पूछा कि आप क्या चाहते हैं, आपने जो बात उठायी है, इसको कैसे हल किया जा सकता है? किसी ने यह नहीं पूछा कि आप हमसे क्या चाहते हैं?

सभापति महोदय : श्री जय प्रकाश जी, रावत जी यहां बैठे हुए हैं। ये काफी रिस्पॉन्सिबल लगे क्योंकि खड़े होकर भोजपुरी में इन्होंने कुछ आश्वासन दिया है। मैं समझता हूं कि श्री रावत जी इसे और ज्यादा गंभीरता से लें ताकि जय प्रकाश जी को कोई शिकायत न रहे।

श्री हरीश रावत: माननीय सदस्य की बात बहुत महत्वपूर्ण है। शून्य काल में माननीय सदस्य कई महत्वपूर्ण मुद्दे उठाते हैं। हम पार्लियामेंटरी अफेयर्स से संबंधित मंत्रालयों को, उन्होंने जो सवाल उठाया है, उनको रेफरेंस करेंगे।

श्री जय प्रकाश अग्रवाल(उत्तर पूर्व दिल्ली) : दरअसल, यहां बैठने वाला कोई भी व्यक्ति छोटा नहीं है। उसके दिल में कोई न कोई दर्द होता है, यह बात हमें भी मालूम है। यह हो सकता है कि सरकार के साधन सीमित हों। वह किसी चीज को मान सकती है, नहीं मान सकती है। लेकिन उस विभाग के मंत्री को इतना तो करना चाहिए कि वह हमें बुलाकर पूछें कि आपने जो यह मुद्दा उठाया, इसमें आप हमसे क्या सुधार चाहते हैं, इसमें आप क्या लाइन ऑफ एक्शन चाहते हैं, हम क्या मदद कर सकते हैं? लेकिन माफ करना मुझे आज यहां इतने साल हो गए, हमने कितने मुद्दे यहां उठाए होंगे, लेकिन आज तक किसी का फोन तक नहीं आया। इसके बारे में इससे भी बड़ा तमाशा और बताता हूं। यहां जब मैंने नियम 377 के अंतर्गत दिल्ली मेट्रो के बारे में मामला उठाया और फिर मैंने खत लिखा तो मंत्री जी का एक जवाब आया मेट्रो के बारे में कि आपके क्षेत्र में मेट्रो नहीं जा सकती क्योंकि वहां यमुना नदी का किनारा है। माफ करना, जिसको भी मैंने यह पत्र दिखाया, उससे इस पत्र का बहुत मज़ाक बना। सारी दिल्ली यमुना नदी के किनारे बसी हुई है। लोग समुद्र से रेल निकाल कर पेरिस से लंदन ले गए। दूसरी जगह छः कंस्टीट्यून्सी में यमुना के ऊपर पुल बनाकर दिल्ली मेट्रो ले गए। मैं कहना चाहता हूं कि दिल्ली मेट्रो दिल्ली के लिए बनी थी। आज की तारीख में दिल्ली का 75 प्रतिशत क्षेत्र दिल्ली मेट्रो से वंचित है तो किसलिए आपने यह मेट्रो बनाया था?

मैट्रो बुनियादी तौर पर दिल्ली के एक से दूसरे हिस्से को जोड़ने के लिए बनाई गई थी और मेरा दर्द मेरे लिए है, क्योंकि डैंसिटी ऑफ पोपुलेशन मेरे यहां सबसे ज्यादा है, मंत्री जी और जो लोग वहां रहते हैं, वे लोग गरीब हैं, नौकरीपेशा लोग हैं, पूर्वांचल के हैं, कुछ उत्तराखंड से आये हैं, कुछ कहीं और से आये हैं और वे नौकरी की तलाश में इधर-उधर जाते हैं। उसमें मैट्रो सबसे बढ़िया उनका साधन हो सकता है। कई बार मैं इस मसले को उठा चुका हूं। सिवा इसके कि मैं किसी दिन आपके यहां भूख हड़ताल पर बैठ जाऊं या यहां धरना दे दूं और इसके अलावा मेरे पास कोई चारा नहीं है। मैं यह चाहता हूं कि जो मंत्रीगण यहां दोनों-तीनों दोस्त बैठे हैं, ये मेरी इस बारे में मदद करें। मुझे नहीं मालूम कि कृष्णा जी के यहां क्या हाल है, लेकिन मेरे यहां तो बहुत बुरा हाल है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आपकी निश्चित रूप से मदद होगी। Rawat ji, it is your duty now.

महिला और बाल विकास मंत्रालय की राज्य मंत्री (श्रीमती कृष्णा तीरथ): हम इसको बनवा देंगे।

श्री जय प्रकाश अग्रवाल : यह एश्योरेंस है, सर। सभापति महोदय, एक एश्योरेंस मिला है, यह एश्योरेंस में आना चाहिए। इन्होंने कहा है कि हम बनवा देंगे।...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): मंत्री जी, खड़े होकर कह दीजिए।...(व्यवधान)

श्रीमती कृष्णा तीरथ: जनता के हित के काम जरूर होने चाहिए और दिल्ली में मैट्रो जब एक रास्ते से जा सकती है तो उसे बढ़ाकर दूसरे रास्ते से भी किया जा सकता है।...(व्यवधान)

श्री मिथिलेश कुमार (शाहजहांपुर): माननीय सभापति महोदय, आपने हमें शून्य काल में बोलने का मौका दिया, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : एक मिनट मिथिलेश जी। शैलेन्द्र जी, मैं आपसे कह रहा हूं कि आप तो कार्य-मंत्रणा समिति में, यानि बिजनेस एडवाइज़री कमेटी में बैठते हैं। जैसे हमने झारखंड में स्पीकर रहते हुए एक जीरो ऑवर की कमेटी बना दी थी, उसका चेयरमैन बना दिया, मैम्बर बना दिये, अगर जीरो ऑवर की एक कमेटी बन जाये और आप स्पीकर जी की उपस्थिति में अगर यह काम करेंगे तो होगा क्या कि जैसे दूसरी कमेटियां हैं, वैसे ही यह भी आपके बिन्दु को उठाकर समिति आफिसरों को बुलाएगी, पूछेगी कि साहब, यह क्यों नहीं हो रहा है, बताइये। इसमें क्या दिक्कत है।

श्री जय प्रकाश अग्रवाल : बात यह है कि जब तक कोई मंत्री नहीं बनता है, तब तक तो वह हमारा दोस्त होता है, लेकिन मंत्री बनने के बाद वह दोस्ती खत्म हो जाती है।...(व्यवधान)

श्री अर्जुन राम मेघवाल : इसमें कमेटी बना सकते हैं।...(व्यवधान)